एक नजर में

नवागत जनपद सीईओ जोशुआ पीटर नें किया पदभार ग्रहण सरपंच संघ अध्यक्ष पत्रकार संघ अध्यक्ष ने किया स्वागत

सरदारपुर । सोमवार को नवागत जनपद सीईओ जोशुआ पीटर नें पदभार ग्रहण किया द्य मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत धार अभिषेक चौधरी ने पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग भोपाल के पत्र क्रमांक 1168 / 3691070/2025/ वी -5 / 22 / स्थापना भोपाल दिनांक 10 .09 .2025 के परिपालन में सोमवार को आदेश जारी करते हुए जोशुआ पीटर को सरदारपुर जनपद सीईओ का प्रभार सौंपने के आदेश जारी किए गए। जिला पंचायत सीईओ द्वारा आदेश जारी करते हुए श्रीमती मारीषा शिंदे को सरदारपुर जनपद पंचायत के अतिरिक्त प्रभार से कार्य मुक्त किये जाने के आदेश दिए गए थे द्य नवागत जनपद सीईओ पीटर के दोपहर पश्चात पदभार ग्रहण की सूचना मिलने पर पत्रकार संघ अध्यक्ष मोहनलाल यादव के नेतृत्व में पत्रकार विष्णु प?यार भंवरसिंह सोनेर मनोज बैरागी सरदार पाटीदार एवं सरपंच संघ अध्यक्ष मयाराम मेडा के नेतृत्व में ग्राम पंचायत चालनी माता सरपंच बहादुर गणावा हातोद सरपंच गोपाल डामर आदि ने नवागत जनपद सीईओ को माला पहनाकर एवं मिठाई खिलाकर स्वागत किया । चर्चा के दौरान सीईओ पीटर ने बताया कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के तहत पात्र हितग्राहियों को जन प्रतिनिधि एवं मीडिया कर्मियों के सहयोग से लाभान्वित किया जाएगा द्य योजनाओं के सुचारू संचालन में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी द्य इस दौरान सीईओ पीटर ने जनपद कर्मचारियों से व्यक्तिगत मुलाकात कर वस्तु स्थिति का जायजा लिया द्य

गायत्री माता की ज्योति कलश यात्रा बडोदिया गांव पहुँची श्रद्धालुओं ने स्वागत किया

सरदारपुर । अखिल विश्व गायत्री परिवार, युग तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार के आव्हान पर 2026 में आयोजित होने वाले माताजी भगवती देवी शर्मा की जन्म शताब्दी एवं अखंड दीप शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में विशाल ज्योति कलश यात्रा का रविवार को बडोदिया मे सुबह 9 बजे आगमन हुआ, ज्योति कलश यात्रा का गांववासी श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा करके स्वागत वंदन और पूजन किया। साथ ही यहां 5 कुंडिय गायत्री यज्ञ का समापन भी हुआ। मां गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी अध्यक्ष बीजे उपाध्याय सरदारपुर ने बताया कि ज्योति कलश यात्रा शाम को गांव अमझेरा में भी कलश यात्रा निकाली गई व दीप यज्ञ का आयोजन हुआ। दूसरे दिवस सोमवार को ज्योति कलश यात्रा दसई गांव मे प्रवेश किया, गाजे बाजे के साथ शोभायात्रा निकाली गई। कालिका माता मंदिर बस स्टैंड दसई पर 9 कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। बडी संख्या में माता भक्तजन शामिल होकर धर्म लाभ लिया गया। इसके बाद ज्योति कलश यात्रा यहां से शाम को गांव बरमंडल मे पहुंची, कलश यात्रा निकालकर दीप यज्ञ का आयोजन गायत्री परिवार जनों के द्वारा किया गया। ट्रस्टी अध्यक्ष उपाध्याय सरदारपुर ने बताया कि मंगलवार को गांव गोंदीखेड़ा ठाकुर में 5 कुंडिय हवन आयोजित करने के बाद दोपहर 4 बजे गांव राजोद में विशाल कलश यात्रा प्रमुख मार्ग से होते हुए आथमन वास मंदिर के पास कोटेश्वरी नदी के तट पर दीप यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। निकाली जा रही ज्योति कलश यात्रा जिला समन्वयक हीरालाल पाटीदार और तहसील समन्वयक जीवनलाल पाटीदार की मौजूदगी में सरदारपुर तहसील के राजोद में ही समापन होगा। उपाध्याय ने बताया कि इसके पश्चात ज्योति कलश यात्रा बदनावर तहसील के लिए प्रस्थान करेगी। गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्ता सतीश चंद्र माहेश्वरी, जगदीश धाकड़, रामाजी राजोद आदि गायत्री परिवार के परिजनों और सक्रिय कार्यकर्ताओं ने सरदारपुर क्षेत्र के श्रद्धालुओं से इस आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर धर्म, पुण्य लाभ लेने के लिए अनुरोध किया है।

माही माता में शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने आस्था की डूबकी लगाई भजन कीर्तन किए

सरदारपुर । सरदारपुर क्षेत्र की प्रसिद्ध माही सिद्ध क्षेत्र माही माता घाट पर सोमवार को शरद पूर्णिमा को लेकर बडी संख्या में श्रध्दालुओं का जमावड़ा रहा। श्रध्दालुओं का सुबह से ही आने का क्रम शुरू हो गया था। शरद पूर्णिमा को लेकर श्रध्दालुओं ने माही नदी में श्रद्धा और आस्था की डूबकी लगाकर माही सिद्ध क्षेत्र के शिव महादेव, बाबा रामदेव, बलदेव हनुमान, नवग्रह शनिदेव देवस्थान पहुंचकर कर पूजन दर्शन लाभ लिया, भजन-कीर्तन किए। शरद पूर्णिमा के चलते देव स्थलों पर श्रद्धालुओं का आने-जाने का क्रम शाम तक चलता रहा।

नंदी की निकाली शव यात्रा ग्रामीणों ने दी अंतिम विदाई

टांडा (धार) नि प्र नगर में लगभग 23 वर्षो से अधिक उम्र का सांड (नन्दी) अल्प बीमारी के बाद अपनी पूर्ण आयु कर आज शिव में विलीन हो गया है जिसकी अंतिम यात्रा ऋण मुक्तेश्वर मंदिर पुलिस थाना परिसर से निकाली गई नंदी के शव को टैक्टर ट्राली में सजाया गया था तथा। ढोल मांदल की थाप पर नगर के प्रमुख मार्गो से निकाला गया ग्रामीण जनों द्वारा पुष्प वर्षा भी की गई तथा धूप दीप लगाए गए नगर के मुक्तिधाम पर शिव भक्तो द्वारा बाबा की नम आंखों से अंतिम विदाई की गई । नंदी बाबा पिछले 2002 में देवेंद्र जी राजपूत टांडा के यहां जन्म लेने के बाद उन्हें छोड़ा गया था जो आज 23 वर्ष पूर्ण कर अंतिम विदाई ली कालू नाम से नंदी बाबा को जाना जाता था।

राष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारी पर संभागीय बैठक आयोजित

कुक्षी ।अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद की संभागीय बैठक मांडू में परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष धरमपुरी विधायक कालूसिंह ठाकुर के मुख्य आतिथ्य एवं अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के संभाग अध्यक्ष श्री एडवोकेट नारायण सिंह भिड़े की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई ।बैठक को सम्बोधित करते हुए विधायक कालूसिंह ठाकुर ने कहा है कि परिषद को मजबूत बनाने के लिए जिला ब्लॉक पंचायत स्तर पर गठन करना होगा और यह कार्य अति शीघ्र किया जाएगा उन्होंने परिषद के दिल्ली में होने जा रहे .

संघ के 100 वर्ष : स्वयंसेवकों की कदमताल

हर दिशाओं में नजर आ रहे संचलन से धार की धरा हुई संघमय ...

धार। (5 अक्टूबर- 2025) संघ की स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) की बेला पर 5 अक्टूबर को ऐतिहासिक धारा नगरी में स्वयं सेवकों का निकला विराट और भव्य पथ संचलन बरसों बरस याद रहने वाली स्मृतियों में अंकित हो गया है । हर दिशाओं में नजर आ रहे संचलन से ऐसा लग रहा था मानों धार की धरा संघमय हो गई हो । विजयादशमी के अवसर पर प्रतिवर्ष निकलने वाला पथ संचलन इस वर्ष संघ की स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) होने से भव्य स्वरूप में निकला। संघ की 14 बस्तियां 136 मोहल्ले से सभी स्वयंसेवक किला मैदान पर एकत्रित हुए । संचलन को लेकर पूरे नगर में भारी उत्साह दिखाई दिया।

विगत एक माह से स्वयंसेवक संचलन की तैयारी के लिए दिन-रात जुटे हुए थे । संघ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष निकलने वाला संचलन इस वर्ष बहुत ही ऐतिहासिक एवं विराट रूप में निकला। सभी स्वयंसेवक संघ की गणवेश धारण करते हुए अनुशासन के साथ कदमताल मिलाते हुए संचलनों में चल रहे थे। छोटे बच्चे भी संचलन में सम्मिलित होने के लिए दिखे आतुर ।

हिंदू समाज प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हुआ सहभागी। धार शहर के हिंदू समाज में आत्मविश्वास नजर आया। नगर में जगह- जगह छोटी - छोटी बेटियों एवं मातृशक्तियो द्वारा आरती उतारकर स्वागत किया गया ।बच्चों की आंखों में देशभक्ति की ज्योति और स्वर में समर्पण की गूंज देखकर लगा मानो कि आने वाली पीढ़ी राष्ट्रसेवा की ज्योति को और प्रखर बनाएगी।

यह क्षण संस्कार, अनुशासन और मातृभूमि के प्रति निष्ठा का सजीव दर्शन था।

संचलन के मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत किला मैदान धार में दोपहर 4 बजे हुई । हजारों स्वयंसेवकों ने अनुशासित तरीके से खड़े होकर वहां से प्रचल किया। पथ संचलन नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरा । किला मैदान से प्रारम्भ होकर घोड़ा चौपाटी, पाटीदार तिराहा, कुम्हार गड्डा, बस स्टैंड, पट्टा चौपाटी, नालछा दरवाजा, पो चौपाटी, राजवाडा, आनंद चौपाटी, नर्सिंग चौपाटी, मोहन टाकिज से उदाजीराव चौपाटी होते पुनः किला मैदान में समापन हुआ ।

संचलन के पूर्व मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में संत श्री विभंजन सागर जी मुनिराज विराजित रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री रघुवीरसिंह जी सिसोदिया, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ- मालवा प्रांत सहकार्यवाह की गरिमामय उपस्थिति रही । कार्यक्रम के विशेष अतिथि के रूप में श्री प्रकाश जी बाफना उद्योगपति व समाजसेवी उपस्थित रहे। नगर संघचालक डॉ दिनेश कर्मा मंचासीन रहे। अतिथि स्वागत विभाग कार्यवाह अरविंद चौधरी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में विराजित संत श्री विभंजन सागर जी मुनिराज ने अपने आशीर्वचन में कहा पावन शताब्दी के अवसर पर सभी स्वयंसेवकों को साधुवाद। राष्ट्र को समर्पित संगठन हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। स्वयंसेवक दूरदृष्टि का भाव रख राष्ट्र को परमवैभव पर पहुंचे इसलिए स्वयंसेवक अपने हित को नहीं अपितु राष्ट्रहित को प्राथमिकता देता है । दृष्टि से दिशा और दिशा से जीवन की दिशा बदल जाती है पहले मैं नहीं राष्ट्र को देखना ही स्वयंसेवक का भाव होता है।

आदिनाथ भगवान की पांच शिक्षा- अपने को बदलो दुनिया को नहीं , अपना कार्य स्वयं करो दूसरों से अपेक्षा नहीं। जीवन में स्वतंत्र रहों गुलाम नहीं। स्वछंद नही बनना जहां रहो जैसे रहों खुश रहों। अहिंसा धर्म को अपनाना और सत्य धर्म का पालन । उन्होंने कहा कि शाखाओं के माध्यम से शारीरिक-मानसिक के साथ साथ चारित्रिक गुणों का विकास भी हो रहा है। संघ के अनुसांगिक संगठनों से भी सभी को जुड़ना चाहिए। पाश्चात्य संस्कृति में विश्व एक व्यापार है हमारी संस्कृति कहती विश्व एक परिवार है। हमारी संस्कृति की पहचान हमारे आचरण से है। कुटुम्ब प्रबोधन समरसता स्वदेशी हमारे आचरण में होना चाहिए। भारतीय अर्थव्यवस्था का सहयोग हमारे सभी के कर्तव्य के जागरण से ही होगा। मातापिता के चरण छुने में जो आनंद है वो हाथ मिलाने में नहीं ।मुनिराज ने कहा संघ के स्वयंसेवकों का समर्पण त्याग और साधना मुझ सहित हम सभी के लिए प्रेरणा है।

हमें भारत को पुनः अखण्ड राष्ट्र बनाना है तो शक्ति की आराधना आवश्यक है। उन्होंने संघ की सौ वर्षों की यात्रा के बारे में बताते हुए कहा 1925 से 1940 तक सारे आन्दोलन इस कालखंड में अपने चरम पर थे। ऐसे समय में डॉ केशव बलीराम हेडगेवारजी ने संत-महन्त व समाज को संगठित करना तथा प्राप्त स्वतंत्रता को स्थायित्व देना। इस हेतु क्रांतिकारी व राष्ट्रवादियों के सतत् संपर्क में रहे ओर संघ को 1925 में अपने घर से संघ की स्थापना कर 17 बालको के सह घोष से संघ प्रारंभ किया।

1980 से 2005 के बीच बालासाहब जी देवरस पु. संघचालक बने 1986 रामजन्म भूमी न्यास की स्थापना हुई। श्रीराम जन्मभूमि के लिए 30 अक्टूबर 1990 को कार सेवा प्रारंभ हुई ।1992 में विवादित ढांचा कारसेवा कर के गिरने में भी संघ की योजना अग्रणीय रही। पुनः10 दिसंबर 1992 को संघ पर प्रतिबंध लगाया गया। 10 मार्च 2000 मा. सुदर्शन जी मा. संघचालक बने इस दौरान 25 जनवरी 2003 में भुज में भुकंप आपदा में सेवा कार्य किया । 2006 गुरु जी शताब्दी वर्ष की योजना को परिणिति दी। 2007 राम सेतु आंदोलन में भी संघ के कार्यकर्ता सहभागी हुए। वर्तमान कालखंड संघ में 50हजार प्रकल्प चलाए जा रहे है । 2021 करोना महामारी में, रक्तदान व भोजन व्यवस्था का कार्य योजनाशः किया गया ।श्री राम जन्मभूमि निधी समर्पण अभियान को लक्ष्य से दुगना परिणाम में परनीत किया।

हिन्दू विजयी हुआ किंतु अलगाववादी देश विरोधी शक्तियाँ परास्त नहीं हुई हैं। देश में अनेक अलगाववादी आंदोलन मुखर हुए। जाति, भाषा, वर्ग के आधार पर अलग पहचान (आईडेंटिटी) खड़ी कर अराजक आंदोलन 7 विश्व में भी विचारधाराओं का संघर्ष सहत पर आया। स्वयंसेवकों व समाज की सज्जन शक्ति के प्रयत्नों से अलगाव के षड्यंत्र विफल हुए जिसमे सद्भाव बैठकों की अहम भूमिका रही।

संघ की आगामी कार्य योजना पंच परिवर्तन

संघ की आगामी कार्य योजना को विस्तार से बताते हुए श्री रघुवीर जी ने कहा कि अपने देश को सम्पन्न बनाने के लिए हमे प्रथम स्व के भाव का जागरण करना,दूसरा नागरिक शिष्टाचार का पालन करना, तीसरा कुटुंब व्यवस्था को सम्भालकर रखना और परिवार में मंगल सभा करना। चौथा सामाजिक समरसता का पालन करना और पाँचवा पर्यावरण संरक्षण इन पाँच बिंदुओं पर कार्य कर हमें अपने राष्ट्र को सम्पन्न बनाना है।

घोष की दस इकाईयों ने उत्साहवर्धन किया...

संचलन का विराट रूप होने से इस वर्ष संघ के घोष दल को लेकर विशेष तैयारी की गई थी । 182 वादकों ने अभ्यास किया था । संघ घोष आम समाज के लिए बहुत ही आकर्षण का केंद्र बना ।

घोष को लेकर कार्यकर्ता विगत कई दिनों से निरन्तर अभ्यास कर रहे थे । घोष दल मे 11 पथक 1 प्रगत पथक जो कि 7 से ज्यादा रचनाओं का वादन किया। जिसमें मेवाड़, सोनभद्र, श्री राम,वीमीरा भूप, शिवरंजनी, उदय शामिल थे । जिसके मधुर स्वर पर स्वयंसेवक कदमताल करते नजर आएं ।

75 वर्ष से अधिक उम्र के स्वयंसेवकों ने भी की सहभागिता ....

1960 के दशक में बने स्वयंसेवक से लेकर तो आज तक के सभी स्वयंसेवक संचलन में सम्मिलित हुए । इस संचलन की खास बात यह थी कि जिन लोगों ने संघ रूपी फसल बोई है ऐसे 75 वर्ष से ऊपर के स्वयंसेवक भी इस संचलन के लिए बड़े उत्साहित दिखे और उनके लिए सम्मान के साथ एक अलग से मंच पर स्थान तय किया गया था जहां पर उनका उत्साह देखते ही बन रहा था ।

सन 1928 में संघ का नामकरण हुआ

इस बीच वर्धा के वर्ग में गांधी जी भी आए व संघ कार्य से प्रभावित हुए। विजयादशमी ही संघ स्थापना का एक पवित्र कालखंड है। इसलिए स्वयंसेवक विजयादशमी उत्सव मनाते आ रहे हैं। डॉ साहब के बाद श्री गुरु जी संघचालक बने ।अँग्रेजो द्वारा भी संघ पर प्रतिबंध लगाया था।1942 में अंग्रेजो भारत छोडो अंदोलन, 1947 विभाजन में संघ सेवा भाव व विस्थापीत बंधुओ को व्यवस्था देने में व्यस्थ रहा। संघ पर 4 फरवरी 1948 से प्रतिबंध लगा था,पश्चात सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इस प्रतिबंध को हटाया, 1975-77 दो वर्ष का आपातकाल रहा इसमें स्वयंसेवको पर अत्याचार हुआ। 1948- राजा जयसींग से आग्रह पर कश्मीर विलय भी संघ सहयोग से हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री रघुवीरसिंह जी सिसोदिया

ने स्वयंसेवको को संबोधित करते हुए कहा की हम सौभाग्यशाली स्वयंसेवक हैं जो संघ का शताब्दी वर्ष देख रहे है। और यह अवसर हमें हमारे पुरोधा रहे स्वयंसेवको के परिश्रम से मिला है। एक समय ऐसा था जब हिंदुत्व के भाव मे कमी आई और हम पर विदेशी आक्रांताओं ने राज किया। जब 1921में डॉ हेडगेवारजी को जेल हुई तब उन्होंने चिंतन किया और पाया कि हमारे समाज में ही विकृत्ति आ गई हैं और उसे दूर करने और हिन्दू समाज को संगठित करने हेतु 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। तब लोगों ने उनका उपहास भी किया ।लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी निरन्तर संघ कार्य करते हुए समाज जागरण का कार्य किया ।नतीजा यह हुआ कि संघ की एक घंटे की शाखा से व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य ब?ता गया।

एक नजर — बदनावर में संघ शताब्दी वर्ष का भव्य पथ संचलन

संघ का उद्देश्य आत्मगौरव, संगठन और राष्ट्रनिर्माण व नगर में गूंजे राष्ट्रभक्ति के नारों के स्वर

बदनावर . रविवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर निकाला गया ऐतिहासिक पथ संचलन नगर के इतिहास का सबसे बड़ा आयोजन बन गया, जिसमें चार से अधिक शाखाओं के स्वयंसेवक शामिल हुए और नगर के मार्ग राष्ट्रभावना, अनुशासन और समर्पण के रंगों से सराबोर नजर आए, हर घर के दरवाजे पर नागरिकों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया, माता-बहनों ने आरती उतारी और फूलों से सजा मार्ग स्वयंसेवकों के समर्पण और अनुशासन का दृश्य प्रस्तुत कर रहा था, प्रार्थना स्थल पर पहली बार महिलाओं ने सामूहिक प्रार्थना की और नगर में समरसता का संदेश फैलाया, कार्यक्रम में तीन पीढ़ियो की सहभागिता आकर्षण रही, 85 वर्षीय वरिष्ठ स्वयंसेवक शिक्षक रघुनाथ प्रसाद शर्मा अपने पुत्र और पोते के साथ उपस्थित हुए, वहीं रमेशचंद्र चौहान, दशरथ सिंह डोडिया, बापूसिंह रेंजर, गिरधारीलाल वर्मा और

चिमनलाल राठौड़ सहित कई परिवारों ने तीन पीढ़ियों के साथ भाग लिया, इंदौर और भोपाल में शासकीय पदों पर कार्यरत कई स्वयंसेवक विशेष अवकाश लेकर आए, लगभग4 .3 किलोमीटर लंबे मार्ग पर संचलन हुआ जिसमें आधे किलोमीटर से अधिक लंबी कतारें बनीं और नगर एक घंटे तक जय श्रीराम, भारत माता की जय और वंदे मातरम् के नारों से गूंजता रहा; मुख्य अतिथि वक्ता प्रांत प्रचार प्रमुख जयशंकर शर्मा

अध्यक्षता नगर पंचायत कर्मी भारत ऊंटवाल और खंड संघचालक राजेंद्र सिंह पवार मंचासिन रहे, जबकि बौद्धिक सत्र में संघ प्रांत प्रचार प्रमुख जयशंकर शर्मा ने उद्बोधन दिया, जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि संघ केवल शाखा लगाना या कार्यक्रम आयोजित करना नहीं है बल्कि यह आत्मगौरव, संगठन, अनुशासन, सेवा और राष्ट्रनिर्माण की भावना का प्रतीक

है, उन्होंने संघ की स्थापना सन् 1925 में नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई बताई, उस समय देश पर विदेशी शासन था और समाज में निराशा, विभाजन और आत्महीनता का वातावरण व्याप्त था, हेडगेवार ने महसूस किया कि समाज में आत्मविश्वास और संगठन की चेतना तभी आएगी जब लोग अपने धर्म, संस्कृति और परंपरा को जानेंगे और अपनाएंगे, इसी सोच से उन्होंने संघ की नींव रखी, पहली शाखा देवास में शुरू हुई और विधिवत उज्जैन में प्रारंभ होकर कठिन साधना के बल पर संघ का कार्य धीरे-धीरे पाकिस्तान के कराची तक फैल गया, कुशाभाऊ ठाकरे जैसे प्रचारक कोटा तक संघ कार्य के प्रसार हेतु गए और संघ ने अंग्रेजों और मुगलों द्वारा भरी गई हीनता की भावना को मिटाकर हिंदू समाज में आत्मविश्वास और गौरव का भाव जगाया, जिससे आज नया समाज अपने इतिहास, धर्म और संस्कृति को जानकर गर्व अनुभव करता है और नई पीढ़ी अपने अतीत को जानने के लिए लालायित है; शर्मा ने कहा कि परिवर्तन और सुधार भारतीय समाज का स्वभाव हैं और संघ उसी परिवर्तन की चेतना है, जिसने शंकराचार्य, चाणक्य, शिवाजी, महाराणा प्रताप और संत रविदास जैसी परंपराओं को आगे बढ़ाया और समाज में संगठन, अनुशासन, साहस, शौर्य, परोपकार, दया, नैतिकता और देशभक्ति के बीज बोए, उन्होंने बताया कि संघ ने विभाजन, आपातकाल और महात्मा गांधी हत्या के झूठे आरोप जैसी कठिन परिस्थितियों में भी स्वयंसेवकों को संयमित रहकर सेवा कार्य जारी रखने का मार्ग दिखाया, गुरुजी गोलवलकर के नेतृत्व में संघ ने साधु-संतों, मठों और विभिन्न पंथों को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया, शासकीय सेवाओं में लगे कार्यकर्ता भी समाज सेवा में शामिल हुए,